"चौबीस प्रशन"

- कउण सु मुकता कउण सु जुगता । कउण सुगिआनी कउण सु बकता । कउण सु गिरही कउण उदासी कउण सु कीमत पाए जीउ । 1।

अर्थः- वह कौन सा मनुष्य है जो माया के बंधनों से आजाद रहता है और प्रभु के चरणों में जुड़ा रहता है ? वह कौन सा मनुष्य है जो परमात्मा के साथ गहरी सांझ बनाए रखता है और उसकी महिमा करता है ? अच्छा गृहस्थी कौन हो सकता है ? माया से निर्लिप कौन है ? वह कौन सा मनुष्य है जो मनुष्य जन्म की कद्र समझता है ?

• किन बिध बाधा किन बिध छूटा । किन बिध आवण जावण तूटा । कउण करम कउण निहकरमा कउण सु कहै कहाए जीउ ।2।

अर्थः- मनुष्य माया के मोह के बंधनों में कैसे बंध जाता है और कैसे उन बंधनों से स्वतंत्र होता है ? किस तरीके से जनम मरन का चक्र खत्म होता है ? अच्छे काम कौन से है ? वह कौन सा मनुष्य है जो दुनिया में बिचरता हुआ भी वासना रहित है ? वह कौन सा मनुष्य है जो स्वयं महिमा करता है तथा औरों से भी करवाता है ?

• कउण सु सुखीआ कउण सु दुखीआ । कउण सु सनमुख कउण वेमुखीआ । किन बिध मिलीऐ किन बिध बिछुरै इह बिध कउध प्रगटाए जीउ।3।

अर्थः- सुखी जीवन देने वाला कौन है ? कौन दुखों में घिरा हुआ है ? सन्मुख किस को कहा जाता है ? बेमुख किसे कहते हैं ? प्रभु चरणों में किस तरह मिल सकते हैं ? मनुष्य प्रभु से कैसे बिछुड़ जाता है ? ये विधि कौन सिखाता है ?

• कउण सु अखर जित धावत रहता । कउण उपदेस जित दुख सुख सम सहता । कउण सु चाल जित पारब्रहम धिहाए किन बिध कीरतन गाए जीउ।4।

अर्थः- वह कौन सा शब्द है जिससे विकारों की तरफ दौड़ता मन टिक जाता है ठहर जाता है ? वह कौन सा उपदेश है जिस पे चल के मनुष्य दुख सुख एक समान सह सकता है ? वह कौन सा जीवन ढंग है जिससे मनुष्य परमात्मा को स्मरण कर सके ? किस तरह परमात्मा की महिमा करता रहे ?

• गुरमुख मुकता गुरमुख जुगता । गुरमुख गिआनी गुरमुख बकता । धंन गिरही उदासी गुरमुख गुरमुख कीमत पाए जीउ ।5।

अर्थः- गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलने वाला मनुष्य माया के बंधनों से आजाद रहता है और परमात्मा की याद में जुड़ा रहता है । गुरु की शरण में रहने वाला मनुष्य ही परमात्मा के साथ गहरी सांझ डालता है और प्रभु की महिमा करता है । गुरु के सनमुख रहने वाला मनुष्य ही भाग्यशाली गृहस्थी है । वह दुनिया की किरत - कार करता हुआ भी निर्लिप रहता है । वही मनुष्य जन्म की कद्र समझता है ।

• हउमै बाधा गुरमुख छूटा । गुरमुख आवण जावण तूटा । गुरमुख करम गुरमुख निहकरमा गुरमुख करे सु सुभाए जीउ ।6।

अर्थः- अपने मन के पीछे चल के मनुष्य अपने ही अहंकार के कारण माया के बंधनों में बंध जाता है । गुरु की शरण पड़ के इन बंधनों से आजाद हो जाता है । गुरु के बताए राह पे चलने से मनुष्य के जनम मरन का चक्र समाप्त हो जाता है । गुरु के सन्मुख रह के अच्छे काम हो सकते हैं । गुरु के सन्मुख रहने वाला मनुष्य दुनिया की किरत - कार करता हुआ भी वासना रहित रहता है । ऐसा मनुष्य जो कुछ भी करता है प्रभु के प्रेम में टिक के करता है ।

• गुरमुख सुखीआ मनमुख दुखीआ । गुरमुख सनमुख मनमुख वेमुखीआ । गुरमुख मिलीऐ मनमुख विछुरे गुरमुख बिध प्रगटाए जीउ ।7।

अर्थः- गुरु के सन्मुख रहने वाला मनुष्य सुखी जीवन वाला है । पर अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य नित्य दुखी रहता है । गुरु के बताए मार्ग पर चलने वाला मनुष्य परमात्मा की तरफ मुंह रखने वाला है । अपने मन के पीछे चलने वाला बंदा रब से मुंह मोड़े रखता है । गुरु के सन्मुख रहने से परमात्मा को मिल सकते हैं । अपने मन के पीछे चलने वाला बंदा परमात्मा से विछुड़ जाता है । गुरु के सन्मुख रहने वाला मनुष्य ही सही जीवन की विधि सिखाता है ।

• गुरमुख अखर जित धावत रहता । गुरमुख उपदेस दुख सुख सम सहता । गुरमुख चाल जित पारब्रहम धिआए गुरमुखि कीरतन गाए जीउ ।४।

अर्थः- गुरु के मुंह से निकले शब्द ही वह बोल हैं जिसकी इनायत से विकारों की तरफ दौड़ता मन खड़ा हो जाता है । गुरु से मिला उपदेश ही ये समर्था रखता है कि मनुष्य उस के आसरे दुख सुख को एक समान करके सहता है । गुरु की राह पे चलना ही ऐसी जीवन चाल है कि इस के द्वारा मनुष्य परमातमा का ध्यान धर सकता है और परमात्मा की महिमा करता है ।

• सगली बणत बणाई आपे । आपे करे कराए थापे । इकस ते होइओ अनंता नानक एकस माहि समाए जीउ।९।२।३६।

(5-131)

अर्थः- पर, गुरमुख और मनमुख ये सारी रचना परमात्मा ने स्वयं ही बनायी है, सब जीवों में व्यापक हो के वह स्वयं ही सब कुछ करता है और जीवों से करवाता है । वह स्वयं ही जगत की सारी खेल चला रहा है । हे नानक ! वह स्वयं ही अपने एक स्वरूप से बेअंत रूपों रंगों वाला बना हुआ है । यह सारा बहुरंगी जगत उस एक में ही लीन हो जाता है ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"